प्रस्तावना

सन 528 ई सा पूर्व की वैशाख पूर्णिमा को बुद्धत्व प्राप्त कर सिद्धार्थ गौतम सम्यक संबुद्ध बन गए। तथागत बुद्ध की वाणी त्रिपिटक में संकलित है , जो *विनयपिटक, सुत्त पिटक अभिधम्म पिटक* है, इनमें विनय पिटक में संघ व्यवस्था भिक्खु भिक्खुणियों के नित्य नैमित्तिक कर्म विषय एवं आचार्य का परस्पर व्यवहार प्रवज्जा उपसंपदा वर्षा वास आड़ के नियम भोजन, वस्त्र, औषधि, भिक्षाटन नियम, संघ संचालन और संघभेद होनेपर संघ एकता स्थापना के नियमों का विस्तृत वर्णन है इसमें कुल 227 शिक्षापद है जो भिक्खु पातिमोक्ख इन दो भागों में विभाजित हैं। डॉ आंबेडकर की धम्मक्रांति , धम्मदीक्षा 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर शहर में हुई। इसके बाद से नागपुर शहर में बौद्ध धम्म के प्रचार प्रसार के साथ भिक्खु संघ का फिर भारत में सक्रिय होना और विकास होने के साथ भिक्खु संघ के कार्यों का प्रभाव दिखाई देता है।

पूर्वकाल में भगवान बुद्ध ने संघ की स्थापना सर्वप्रथम 'ऋषिपतन मृगदाय में कौडिन, वप्प, भदिय महानाम और अश्वजीत इन पांचों भिक्खुओं को लेकर भिक्खु संघ की स्थापना की थी और वहीं पांच भिक्षुओं को धम्म देशना देकर लोगों के लिए पहली बार धम्म चक्र चलाया, वही यश कुलपु त्र के पिता संसार में सबसे पहले त्रिशरण ग्रहण कर उपासक बने थे बुद्ध ,धर्म और संघ ये त्रिशरण कहलाते हैं, सब उपासक-उपासिका, भिक्षु-भिक्षुणी को इन शरणों को ग्रहण करना पड़ता है। भगवान बुद्ध के पूर्व ऐसा संगठित भिक्षु संघ नहीं था। वैदिक काल में भिक्षुओं की जमात थी किन्तु धर्म प्रचार आदि के लिए उनमें संगठन नहीं था भगवान बुद्ध का भिक्खु संघ एक संगठित संस्था के समान था। यही कारण है कि धम्मपद में भी भगवान बुद्ध ने संघ की मैत्री को सुखदायक कहा है।

सुखो बुद्धानं उप्पादो सुखा सद्धम्मदेसना।।

सुखा संघस्स सामग्गी समग्गानं तपो सुखो।।

अर्थात् सुखदायक है बुद्धों का जन्म , सुखदायक है सद्धर्म का उपदेश , संघ में एकता सुखदायक है और सुखदायक है एकतायुक्त हो तप करना। ऐसे महान भिक्षु और भिक्षुणी संघ की शरण जाकर आत्महित करने का आदेश विमानवत्थु में दिया गया है- " जो चार शुद्ध पुरुषों का युग्म है और जो धर्मदर्शी आठ पुरुष-पुदगल है, जिन्हें दिया गया दान महाफलदायक कहा गया है- उस संघ की शरण जाओ , इस प्रकार इतिहास में पहली बार तथागत ने अपने भिक्षुओं का एक संघ बनाया , उसकी व्यवस्था के लिए संघ के नियम बनाये और संघ के सदस्यों के सामने एक निश्चित आदर्श उपस्थित किया,तथागत बुद्ध ने समाज को ब्राह्मणवादी, शोषण, उत्पीडऩ, धर्म के नाम पर आम आदमी के होने वाले शोषण से बचाने के लिए और समाज को मानव को सही मार्ग बताने सही शिक्षा देने के लिए भिक्खु संघ की स्थापना की थी।

बौद्ध भिक्खु संघ की सदियों की यही परंपरा , विरासत है कि वे निरंतर समाज शिक्षक का , मार्गदर्शक का समाज सेवक का कार्य करे ,बौद्ध भिक्खु समाज के नवनिर्माण में समाज में सामाजिक क्रांति पैदा करने अहम भूमिका अदा करते है। तथागत बुद्ध ने कहा है-

यो दहरो भिक्खु युज्जन्ति बुद्धसासने।

सो मं प्रभासेति अभ्भामुत्तो व चन्द्रिमा।।

अर्थात् नवयुवा, तरुणा जब बुद्ध संघ में अपने आप को सम्मिलित कर देते हैं , उसमें पूरी तरह संयमित हो साधना करते है तो वे समाज को ऐसा प्रकाश ऐसी रोशनी देते है जैसे बादलों से मुक्त चंद्रमा सारे विश्व को अपना शीतल प्रकाश देता है ,अपनी प्रज्ञा की ज्योति से सारे समाज को प्रकाशमान करता है ,जब तथागत बुद्ध ने भिक्खुओं से यह अपेक्षा की कि वे "बहुजन हिताय बहुजन सुखायकी भावना से समाज में कार्य करें, मार्गदर्शन करें तो यह बात उन्होंने केवल उन भिक्खुओं को सम्बोधित करते हुए कही थी कि जो

अहेत थे, जीवनमुक्त थे विकारों से मुक्त थे, ज्ञानी थे, जिन्होंने जीवन की ऊँचाइयों कोप्राप्त किया था।

तथागत के भिक्षु संघ में सभी वर्गों एवं कुलों के लोग प्रव्रजित होकर सम्मिलित हुए थे,बुद्धधर्म में जातिभेद, कुल-भेद, वर्ग या वर्णभेद के लिए स्थान नहीं था। सब समान थे, जैसे समुद्र में मिल जाने के उपरान्त सभी सश्तियो अपना नाम खो देती हैं और केवल 'समुद्र नाम से ही जानी जाती है, वैसे ही क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों के लोग संघ में सम्मिलित होकर शाक्यपुत्रीय श्रमण बौद्ध भिक्षु हो जाते थे उनके पूर्व के नाम-गोत्र समाप्त हो जाते थे, संघ की यह एक महान विशेषता थी, संघ में राजा-रंक, ब्राह्मण-चाण्डाल सभी एक समान आढ़त एवं सम्मानित थे, सभी विभिन्न परिस्थितियों में घर-बार छोड़कर प्रव्रजित हुए थे अत: उनका जनता पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा भिक्षु और भिक्षुणी संघ ने बुद्ध धर्म का प्रचार बड़े उत्साह और लगन तथा नियमों में रहकर किया लोक पर अनुकम्पा करके ही उन्होंने उपदेश दिया यही कारण था कि राजा बिम्बिसार , प्रसेनजित, पुक्कुसाति,चण्डप्रघोत उदयन, बोधिराज कुमार, शाक्य, मल्ल, लिच्छवि आदि बुद्ध-भक्त हो गए। भिक्षु संघ के लिए स्थान-स्थान पर विहारों का निर्माण हो गया। अनाथपिण्डिक , विशाखा, घोषित आम्रपाली आदि धनवानों ने उनके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उनका घर प्रतिदिन भिक्षु संघ के लिए भोजन दान दिया जाने लगा और उनका द्वार बुद्ध संघ के लिए सदा खुला रहने लगा, इस संघ में प्रविष्ट लोगों में कोई किसी का भाई था तो कोई पिता, कोई पुत्र था तो कोई भांजा , कोई माँ थी तो कोई पुत्री , कोई बहन थी तो कोई पत्नी यही कारण था कि थोड़े ही दिनों में भिक्षु संघ के सदस्यों की संख्या पर्याप्त बढ़ गयी थी और सम्पूर्ण देश में काषाय वस्त्रधारी भिक्षु संघ विचरण करने लगा था इनके प्रभाव में आकर लोगों ने पंचशील का पालन प्रारम्भ कर दिया। जीव हिंसा ,चोरी, कामभोगो के मिथ्याचार , मृषावाद और मादक द्रव्यों का सेवन कम हो गया। लोग धार्मिक और सदाचारी बनने का प्रयत्न करने लगे। यक्षों में होने वाली हिंसा बन्द हो गयी और उसे लोग पाप समझने लगे। लोगों में प्रज्ञा , शील, करूणा मैत्री का भव उत्पन्न हो गया। बुद्ध संघ के कारण समाज

की बहुत कुछ बुराइयाँ बन्द हो गयी। बुराईयों को बन्द करने के लिए शासकों को बहुत प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं हुई।